# Ribhuproktam Atmaivanirupanam

# ऋभुप्रोक्तं आत्मैवनिरूपणम्

## Document Information

Text title : Ribhuproktam Atmaivanirupanam

File name : RRibhuproktaMAtmaivanirUpaNam.itx

Category : shiva, shivarahasya

Location : doc_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | shaNkarAkhyaH ShaShThAMshaH | adhyAyaH 36| 3-11||

Latest update : August 5, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

August 5, 2023

*sanskritdocuments.org*

# ऋभुप्रोक्तं आत्मैवनिरूपणम्

आत्मैव परमं तत्त्वमात्मैव जगतां गणः ।
आत्मैव गगनाकारमात्मैव च निरन्तरम् ॥ ३६.३॥

आत्मैव सत्यं ब्रह्मैव आत्मैव गुरुलक्षणम् ।
आत्मैव चिन्मयं नित्यमात्मैवाक्षरमव्ययम् ॥ ३६.४॥

आत्मैव सिद्धरूपं वा आत्मैवात्मा न संशयः ।
आत्मैवजगदाकारं आत्मैवात्मा स्वयं स्वयम् ॥ ३६.५॥

आत्मैव शान्तिकलनमात्मैव मनसा वियत् ।
आत्मैव सर्वं यत्किञ्चिदात्मैव परमं पदम् ॥ ३६.६॥

आत्मैव भुवनाकारमात्मैव प्रियमव्ययम् ।
आत्मैवान्यन्न च क्वापि आत्मैवान्यं मनोमयम् ॥ ३६.७॥

आत्मैव सर्वविज्ञानमात्मैव परमं धनम् ।
आत्मैव भूतरूपं वा आत्मैव भ्रमणं महत् ॥ ३६.८॥

आत्मैव नित्यशुद्धं वा आत्मैव गुरुरात्मनः ।
आत्मैव ह्यात्मनः शिष्य आत्मैव लयमात्मनि ॥ ३६.९॥

आत्मैव ह्यात्मनो ध्यानमात्मैव गतिरात्मनः ।
आत्मैव ह्यात्मनो होम आत्मैव ह्यात्मनो जपः ॥ ३६.१०॥

आत्मैव तृप्तिरात्मैव आत्मनोऽन्यन्न किञ्चन ।
आत्मैव ह्यात्मनो मूलमात्मैव ह्यात्मनो व्रतम् ॥ ३६.११॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते ऋभुप्रोक्तं आत्मैवनिरूपणं सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । शङ्कराख्यः षष्ठांशः । अध्यायः ३६। ३-११॥

- .. shrIshivarahasyam . shankarAkhyaH ShaShThAMshaH . adhyAyaH 36. 3-11..

Notes :
Shiva Rahasyam Amsa-06 consists of the 50 Adhyaya-s that comprise the Ribhu Gita.
Selected verses from Ribhu Gita have been compiled here based on similarity of content.

Proofread by Ruma Dewan

*Ribhuproktam Atmaivanirupanam*
pdf was typeset on August 5, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*